

DPN 6522

सिद्धिलक्ष्मी सहस्रनामस्तोत्र / SIDDHILAKṢMĪSAHASRANĀMA-STOTRA

Title :

Run. No. 7247

Cat. No. 184

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19 x 8.5

Folios 12
(missing 1)
Chapt. / act /

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

इति श्रीरुद्रयामले देवीश्वरसम्बोदे श्रीसिद्धिलक्ष्म्याः सहस्रनामस्तोत्रं
सम्पूर्णं समाप्तं ॥

नृयागिवयिया॥सिद्धीसिद्धिमाताच॥समस्तसिद्धिदायिनी॥सिद्धि॥यियासि
 द्विदवीसिद्धिमातागृथेवच॥गिवरायाचदतणी॥गियाणीगिवनृयिणी॥मे
 धणीनगिव॥भनि॥भनिनृयागिवालय॥गिवदागिवयूयाच॥गिवमाता
 गृथेवच॥गिवयनीगिवयाध॥गिवमान्यागिवयुह॥गिवणीसर्वरुधाच॥
 सर्वननाद्वियिया॥रुवयियारुवाणीच॥रुवनृवाकयालिनी॥कयाल
 धविणीयेव॥कयालददरुयध॥कयालीदरुमल्लम॥यद्वागधालिणीत
 था॥दवीचदवमाताच॥सर्वदवनमस्तु॥दवयियादवनृया॥दवयेवीवि
 नागिणी॥दवयूयादवमान्या॥दवानादितकालिणी॥ॐ न्याणी ॐ न्यामायव

15

10

ॐ नमो विवितागिनी ॐ नमो गायनिराधेव सुवासनमस्तुता ॥ हंस हंस गति
 मीन्या हंस नृया नटयिया सुन्दरी वा नृमवनी ॥ सनृया विमलाचना नमनम
 यिया नन्दा नमनृया यनाजिता ॥ यनायिया यनाजकि ॥ जकि नृया सनृया
 वाणी वा गीश्वरी येष वा गधिरुपददता ॥ वाक सनृया वनावन्दा वनः २
 नात्री वनश्वरी वनयका वनडाणी नृद नृया गेथेवन् ॥ नृद यिया नृद
 माता नृद दहति वागिनी ॥ गंगामदा वनी सीता जीत नृया गजियिया ॥
 यद्धा यद्ध मखी लोत्री वनका वनवासिनी ॥ हिमालय सुतायेव हिमाल
 यनिवासिनी ॥ गिजिजा गिजिजा नृया गहलजननी तथा ॥ जूयभयायभ

5

यात्र यवसुजनका मदा वनी नटियिया सोम्या सा मंका निरुथासनी ॥ वाक्सी यव
 यना मूला यवमगुविनागिनी निगुमगुममथनी ॥ वाक्सी नायायली तथा उ
 मदिमी मरुमनि मरुला सर्वमरुला ॥ लोत्री लोत्री गिणी लोया लोत्रवधुय
 गलनी ॥ रुय रुली रुवकी च मरु रुय विनामिनी ॥ रुमवगममरुमय तथा व
 रुयदायिनी गिवाक्ष गिवमलम रुकानी निवदायिनी ॥ नाम रुयाना गमा
 न्या नाम रुव लक्ष विधी ॥ अतना ननृया च तथा वाननृवल् रु ॥ कानियू
 छिद्वृतिर्मधा लकालका सनृयिणी ॥ रुद्रवी रुयदा रुया रुय नृया रुय युदा
 रुया वविजयायेव रुमवगममरुवला रुमा रुम सनृया च रुम नृया रु

वायाकाटिसूर्ययरावती सूर्यधियासूर्यदहा॥सूर्ययूयासूर्यधनी रानूरा
 नमतीनका॥रानुमधुलवासिनी, खाहासधर्गशिनीय॥खडिनीगुलधावि
 नी, गुलधियागुलियूया॥गुलिमातावल्लयदा, वनदाकयदायेव॥रुयनाग
 कत्रीतथा, रुयदुलीरुयधीच देहादानवनाशिनी॥जीवयूयाजीवदहा॥
 जीवानीयत्रियालिनी॥राकसीधात्रयूयाच थात्रयमा तत्रशिनी॥वायवग
 वायवनी, वाययूयातथेववावायनीधानिकावर्धु, वायदहनिवासिनी॥
 वनदादहिदायेव वृष्टिपूयावियाजिता॥युगयविद्यादूनधि॥सूतध्याव
 वृयिनी॥अयाथावतीवृष्टि यनयूयाजनयदा॥गत्यागस्यमयी॥महाका

रुगानीयाधानिनी॥रुगयतायिमावाच, यिमाचवृयिनीतथा॥कतवाक
 टवाकीवदनुनादनुनानना॥मूककादकादकिनीच, नकदन्तासुलाच
 ना॥मृगकीमृगवासाकी, मृगनाकियत्रियुता॥दिवामयीयायीमयी, दिन
 वृयाअनूधनी॥सावित्रीयेवमययी, उदकन्याजनधनी॥सूर्यजारा
 जायेव, रानूययीरुयसीनि, मदावापि॥कालवापि॥कासीलदधवा
 सिनी॥उद्यमृकिमहाकीमा, उदयाचलवासिनी॥थारागयाथागमागाच
 थागीनीचिरुसंस्त्रिका॥मांसधियामांसवृयि, मांसिहाननिवासिनी॥उय
 नीउयनीयननिकाली थात्रवावाचकामुकी॥काधनाकाधनूयाच

सवकानन्दकाविणी। यायधियागहनीय साधकागताकाविणी॥ वागही
 नागसिंहीय सकलीवक्रधाविणी। वसवाजयदत्तच दल्लहनीदलीसदा
 कामवीचमवाताव गदिनीगजगामिनी। अदहासायसनास्था अदहासक
 वीरथा॥ विद्याधवीवसुमता विद्यातामनकालिणी। अति४सृतिवदमयी
 धावर्द्धुसहाजवा॥ जवाकसुमसंकासो जवाययधियागथा यज्ञायज्ञ
 सवुयाय यज्ञाकिहवधवी॥ यवधुवधिकावधि वधुमधुधियागिनी
 गुह्यगुह्यतनामया सवकधियकालिनी॥ दाकिनीयाकिनीयेव जगदा
 श्रीमधुधिया। गीतिधिया वायवति४यतनययनायना॥ कवालास्याकवा

लीय जगदीवमयीगथा वधुर्द्धुजादशकुजा वधुर्द्धुगहनागथा॥ कात्यायधीजगता
 * ना जगदधुर्द्धुनधवी। नागयज्ञायविनाही नागिनीनागधायिनी॥ माहावापीमहा
 विद्या विद्यानीकाविणीगथा। ललकिंक्षुमधुमाला मधुमालाविहयध। यिहलाक
 यिलायेव समवृत्तयावति४। विहगिहतिदादवी विहगिहयनागथा। कामद्या
 भाकदानना महासंकटनासिनी॥ देययोहाहनादायी। धायदीकयदमजाय
 थाकनायेगाधवी लायामुद्योगवीगति४। सकलीदीयकलीय कमलादीयन
 सनी वेकृष्टनाथयतीय कलासनाथवल्लभा॥ काधवीवरुगवती रुवानी
 रुयनासिनी। नीला नीलवतीवन्दी कोशलयाकामदीगथा॥ दलीकलीयालय

15

की दवावा दव प्रयीणी द्वितीया दशमी यच्छी, तृतीया नवमी तथा चतुर्दशी चतु
 र्थी च, यश्चमी दशमी तथा ७ का दशी सकमी च प्रणियत्यूहि मारिका ॥ अमा
 वास्या कद्रु (येव) समस्त जननी तथा अश्विनी रुद्रणी यस्या माया च यूव काला
 णी ॥ रुद्रा विना नृपाध च, खारी अक्षय नवमसुक्षमला (अया) कलिका च, प्राहिः
 धरुल कालुनी ॥ यवती रुद्रा येव वनसा रुद्र सपूया च। रुद्रपूया रुथारुना
 रुद्रा रुद्र सपूया च ॥ यक्षाया क्षीयक्षपूया यक्षादीक्षानपूयिणी। चर्वा संख्या दव
 जानी, दव गुरु विनाशिनी ॥ अथानी जावक्षथानी। वक्षदद विधाशिनी। वक्ष
 यती वक्षराया वक्षसा ता प्रियंकरी ॥ वक्षपूया वक्षसया वक्षदद निवा

10

5

सिनी। वक्षसी वक्षजननी, वक्षानन्दकरी तथा काकिनी काकपूया च, काकदद नि
 वासिनी। मयी वाक्कनयनी, लाहिती मही तथा ॥ रुद्रवन्द्या रुद्रददा, रुद्रस्थ
 प्रियंकरी। जानकी रुद्रवायूणी, रुद्रिका रुद्रनदिनी ॥ वाऊध्वनी वाऊयली, वा
 ऊमा ता वऊसला। गुरु कुरु प्रियासीमा, गुरुलक्ष्मी सलंकता ॥ ७ कदना द्विद
 ना च, वक्षदना तथेव च। वक्षददा सखा ददा वक्षदद रुद्रनयदा ॥ धनदा नृपयदा
 येव मान्यदा युधदा तथा ॥ कीर्तिदा कीर्तिपूया च, किर्तिवामसपूयिणी। विष्णुकी
 णी गूलया विष्णुलया विष्णुप्रियंकरी ॥ रुद्रिष्णु रुद्रदद रुद्रा, सकिरुक्ता मनाजवा ॥
 वकिनी याशिणी नात्री, नवास्त्रिभुवण तथा। मालिनी मालिकामाल्या माननी

0

cmts.

5

10

15

20

25

यामनारुवा॥ निवदुनी निवकाउ निवकाउ निवासिनी॥ निवकाउ रुक रुक रुक
 नावेदिनासिनी॥ मदीयद्यीमति॥ योतिर्क कयीति कत्री रथा॥ नीति॥ मनी निदनी
 ति॥ नीति नूयानि वरुना॥ नि॥ रुया र्ग रुवनिता॥ मरुसा रुतादायिनी॥ रगनारा
 गनसंसा॥ रगनसा निवासिनी॥ स्वर्गसा स्वर्गनूयाच स्वर्गसा निवासिनी॥ नरि
 कानननूयाच दिगम्बनिर्गविनी॥ आशास्वरासूय कतिभयिनी लर्क वा रथा॥
 मरुदहा मरुगति॥ मरुनूय वरुना॥ कामला नीय दमस्वी रुलेय रुजला
 वना॥ नवला चरुं लाला चरुं लाला नीतिर्गविनी॥ यी नानुग कवा नीवा नीववग
 मना रुवा॥ सिंहु नूया सिंहु कटि॥ सिंहासन निवासिनी॥ सिंहु नग सिंहुवा ना
 लार

सिंहु रुलाय नाकमा॥ सिंधू कन्या सिंधू जाच सिंधू मध्या निवासिनी॥ सिंधू यूया सिंधू
 नी॥ सिंधू वृथल संस्तिता॥ सिंधू नमरा सिंधू माता॥ सक सिंधू स्व नूयिनी॥ अतिरा
 या वासिनी नावधू॥ वनिय वसि वल्ला॥ मदी कन्या मदी यूनी॥ मदी जा रु मि नू
 यिनी॥ रुमि जा रुमि कन्याच रुमि नूयाधू वधवा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 यनूयाच नमनी॥ वासना वासना नीना॥ निवृत्ति निवृत्ति ॥ रु नि ॥ रु मनी रु नः
 ती रुमा॥ वि॥ रुका रुका विनी॥ व॥ रुवनी ना कलीच॥ वनिनी वृथ नूयि
 नी॥ माधवी अ॥ वनि रुता॥ या रुका वास वधिया॥ विनी गा वसनी गाच॥ नीति
 यूकान तिथिया॥ कर्कटी संकटाधीना॥ कथय कथय विथिया॥ स॥ र्गम को लिनी

१५
 १०
 याम्या कलवर्मयकासिनी। विकलुकीचिन्मसा लूनमसावतायिनी॥ गयिनीध
 जिनीधेव विदग्धाविश्वयुयिनी। तमिष्ठागकवायका दक्षयुजीजिगद्विया॥ वि
 (ध)ध्वरीविश्वधर्मी। याधिवीयाधिनसिनी॥ गूढातिगूढात्मयुया मृगकाव
 नवासिनी॥ ध्रुमावरीमहामात्री। मालिनीहातकेध्वरी। कनकासमहातीर्त्त
 कप्ररुद्रययालिका॥ (म)ककुकाकजंघाव यल्लवावाधमृयिका। चतनावि
 युमायाव किवाटीचमहायशः॥ सुवरीनन्दिनीरुद्रा वलरुद्रनिरुद्धिनी।
 हालायियाहालधना सावदाकामदायिनी॥ महामकुमलुयुया लक्ष्म्युय
 ध्वयुयिनी॥ कवचयुगसंसाव कवचधनयुयिनी॥ यल्लकलायुल्लधरा तथा

५
 यल्लजनयिया वीणादफारुहायुय्य वायुहस्ययुय्यया॥ अग्निकालीउल्लको
 लोदी नीलायलदलयरा। वक्रावलीवरुयाव वक्रयुयावकिर्नला॥ सदस्य
 तवाकाध। सदसादनिगमिनी। सदस्यवृद्धगकला सदसाधिरुद्रासुधा॥ सद
 यरानर्गकाशा सदस्यवृद्धसुष्टिकुग। सदस्यवृद्धसुष्टिव सदस्यदहमाधि
 नी॥ यलाक्षमाहिनीमित्री रुर्जरायगिरुयल्ला। काराया कारावृयाव रुर्ज
 रावयारागथा॥ विषयाविषयुयाव विषयानकरीगथा। विषयाकीकली
 गदी कलीरायगिरिकमा॥ विषयानवगावशा कलराकलनायिका। क
 लराकलकाकाय कलया कलिकागथा॥ जयलक्ष्मीजयशीघ्र जययुया

तलीतिनी। तटिनी। ददिनी। यक्ष्ण, यक्ष्णवादनतत्यना॥ यक्ष्णवत्रयियायामा
 यमवृयदिरिक्तथा। आदिनिदित्यसूदरा, जकणकुनितमिनी॥ वेहायसी
 वंदनीच, कोमिवासातनीरथा। निदादीका अनुराच कंकाली गेऊसीरथा।
 सुवीदेया नागवीच, नवीनायामवधत्री। लाहदधुनिष्कलका, निम्मासा
 निखवृयिणी॥ दाविडनागिनीदीया, महातीत्रियमदिनी, उकांना। धामुखीय
 का, वक्ष्णया कक्ष्णनीरुटि॥ दफालिहसा दफलि, वधनिवधनिधिया। वधुनी
 गाथमारीगा, मृडातीमृडवल्ली॥ वनचत्रीरुतयोये, रुतगीरुतनायिका,
 मृयुञ्जयामृयुद्वी, मृयुञ्जयविलासिनी॥ मृयुञ्जयवनावाहा, रुकमृयु

विनासिनी। अमृयुमृयुनूयाच, मृयुवृयवसमिगा॥ यमदायमनूयाच, अयमा
 यमवृयिणी॥ अनुरासुनुरासुनी, तनूमध्यातनूमना॥ रुक्मात्रिणीदीयसु
 का, रुतनारुतवल्ली॥ यथमाच रुतन्याच, मध्याकातमध्यामातथा॥ यक्ष्ण
 वयनकाच, याक्ष्णकाचतत्रिगा। नदिमचरत्रिगाच, वरिष्ठाचगुहागया॥
 यनायनाचयक्ष्णकी, अवधावदवृयिनी। याकायाविकनायेव, उक्ता
 रुक्मिणी॥ वक्ष्णवयणीविचव, निधुकायवृयिणी॥ यायिणीलङ्गनीध
 सुद, त्रिलङ्गायद्वयिया॥ मयनायत्रिगायेव, यत्रयुयात्वनामिका। मनु
 नूयामनुमयी, यययुजनकालिनी॥ यामिनीकनदायुया, सधुलकात्ररु

धिता नृया वही का किमदि लमु काना मृता यत्रा ॥ यत्र छु उग्र यत्र छु च छु यत्र ॥
 निराशिनी ॥ रे वही थो वन थो दा सुया सुवत नृयिणी ॥ निद्रा तन्द्रा तन मया म
 क कली च म किदा ॥ निवसिदा दुर्लभ च सन वे विनि कन नी ॥ मधुका मधु निम
 न् ॥ मधु वका क दा देका ॥ सकली क म कली च यी ताम्ब विधा शिनी ॥ अणु
 मू ॥ यिद ला च ताम्ब वही मृता वही ॥ दिग्ग मनी या शरु सा लुल रुसा यभा चनी ॥
 कल यथी रुद यी ता आय यि य धन रुवा ॥ म हा तया च छु य धु विरु नृया विर
 यि ति ॥ य ही व व यी धना क व म मृ व रु यिणी ॥ व रु ला व ल य ता द रु क रु
 वि ना सिनी ॥ य न् यि न् स नृया च या त नृया च कि कि नी ॥ रु ल सा नी त व सा च

६२

वा वि नृया च वा वि दा यु धु च न्द्र य ती का ल द य य क वि ना शिनी ॥ जी व य धा वि णी
 ये व द क्षि ण य वि भा रु वा ॥ वृ ल ना रु कि दा म कि रु कि म कि य दा यि नी ॥ यू डा
 यू या ला क यू या म हा द व य यु रि ता ॥ च न्द्रि का च न्द्र व द ना च न्द्र म धु ल म धु
 ता ॥ अणु धा य नृया च स ग नी या च ग र्व नी ॥ नि ल नि णी थि नी ये व ना रा हा
 व वि रु यि ता ॥ ल य यू या ल य मा ता ॥ ल य नृय वि धा वि णी ॥ अ णु दे य म र्द ही म
 रु य रु णि धा वि णी ॥ क या ता की क या ता थि ॥ सु स वा सु वा यि या ॥ स च वि या च वि रु
 च रु कि नृय ल म म्मि ता ॥ यि च धि ना व रु रु की ॥ म हा वी न नि वा सि नी ॥ र्द म रु च व
 सा नृदा म यू व व व वा रु ना ॥ ल कि रु सा म र्व ल कि ॥ ल कि नृया य रि व ता ॥ वि न ना स

स ३

15

तस्यैवरावेनभययुक्तिता। उवाचगासनापूरायवमानन्दयुतिनी॥सर्वातिदस
 नूयात्रसर्वतत्त्वयतिस्मिन्। एतदनाएतनूया। एतवन्दनवचिता॥एत
 नूययिया। एत। एतनकलीमहाकुजा। गुरुस्माविनिनस्माव। आकाशस्मातिः
 लारुमा॥तर्ककीरजकीमादी। विल्वयययियावला। दुर्वलादूर्मदिल्लेदी
 चितिनूयाचितिस्मिता॥ब्रह्मयिगलनाविन्ध। गलध्वनयसुसुथा। भाकिकारु
 मकिठुठुकीवन्मकययुजिका॥मानूषीमनजा। आत्मा। अनालयासुर्नाराक्ष॥द
 वसनामिदुक्तु। तथापूयातयाधना॥तयसातयनातयातय४सिद्धिप्रदायि
 नी॥तय४यियायुतनात्रवकखयत्रहसिनी॥ताम्नांसहस्रंदिद्यानी। सिद्धिल

११

10

आमहान्तनाशमयातकथितंदवि। वरुस्यंसर्वकामदी॥सिद्धिलक्ष्यावनाश
 रुवर्ननामसहस्रकं। अमामंशत्रसंथा। तत्रिमंकुसलेतथा॥ननोचमोमवा
 नव। नवम्यामदमीदिन। य४य॥०त्यत्रयारुका। सर्वयाथे४यमयत॥म
 एतयाकत्रवायि। नूनगुरुवसुन्दरी। उकलि। रुवक्रिमध्व। जलमध्वतः
 धेवत्र॥वनमध्वसंयुक्तं। रुश्यालस्यसंययाधनकयचकलठुजातिर्ध
 एत। धेवयाजस्त्रामदसंयुक्तं। य॥०नमसहस्रकं। तयगुरुवरुमसिद्धि
 लक्ष्मी४संयुक्ती॥आवदाय्यकुर्यानि। गुरुयीजय्यदाना। गुरुलावसुख
 याथ्याकयाक्तियर्गति॥गुरुययसमालिख्य। कुरुमागुवचन्दनक्षधन

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

[illegible]

दधीश्वरसत्त्वाद्यधीसिद्धिलक्ष्याः सरसुनामकार्गुसंयुक्तासमाय ॥
 १२४ द्वाहा कृष्णायामगुलवलकृष्णायामगुलिना कृष्णसिद्धिलिप्ता इति कुजव
 नाहासमाना लिप्ता ॥ ब्रह्मसूत्रगतार्गसन्निधिसिद्धिलिप्ता इति कुजव
 विनाजिनां रुगवर्तिणीसिद्धिलिप्ता इति कुजव ॥ इति ध्यात्वा जयमर्तुं यथाकार्गुय
 ॥ १० ॥ ॥ अथ विदुषां तदवदवकिर्तिं केऽप्येवमुक्तो न च वदुः सतथाः
 द्विवादयत्रिरुक्तकामसमागता रुगवददर्शनयः ॥ १॥ इति ब्रह्मसूत्रगतार्गसन्निधिसिद्धिलिप्ता
 रुकां ब्रह्मसूत्रविदधमिसर्वसत्त्वदुःखोद्यत्वा रुगवदयागयत्रमणिवाणि रु
 काजयसहितसंरुपणीयनाया लक्ष्मिदिवमूर्तिदानवोसिद्धिसाध्यविध
 यस्तुमूर्तिर्वाचितकामधर्तुलल्युक्तनादियत्रमसुतिमादकृत्वा रुकसंयकृत्वा
 यधीसिद्धिकाली ॥

ना ५

अग्निनी रुक्मी कलिका आरुणी मृगशीरा आर्द्रा मूलपूर्वा पूर्वा अ
 श्लेषा मघा पूर्वशाकुनी उरुवशाकुनी रुक्मा चित्रा स्वाती विश्व
 खा अनूराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा उरुवशाढा एतदक्ष धनश्रु ६१
 तृतीया पूर्वशाढा उरुवशाढा भवती ॥ धनश्रु २१ ॥ ॥ १३
 विश्वक्रा प्रीति आयुष्मान् सोमराय सारुज्ज अतिगणु मूलार्ध धृति गूल
 गणु वृद्धि ध्रुव व्याघात रुक्मिणी वज्र शुद्धि वीरियाट वलियान् यत्रिद्यन्
 निव सिद्धि साधु गुरु गुरु वृद्धा रुद्ध वेधुति धनश्रु २१ ॥

१०४ विष्णुलक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्र